Q:- शंकर वेदान्त के अनुसार प्रत्यक्ष की अवधारणा।

Ans: शंकर के अनुसार प्रत्यक्ष परम चैतन्य के दो रूपों का तादात्म्य है, एक ओर यह चैतन्य वस्तु के रूप में विशेषीकृत है तो दूसरी ओर वही परम चैतन्य अन्तःकरण की वृत्ति के रूप में है, जिसने वस्तु का रूप ग्रहण किया है।

* जब विषयावच्छिन्न चैतन्य (विषय चैतन्य) और विषयावृत्ति अवच्छिन्न चैतन्य (अन्तःकरण चक्षुदि इन्द्रियों के द्वारा शरीर से बाहर निकलकर विषयों के आकार में परिणत होना वृत्ति कहलाता है) में अभेद होता है, तब ही विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

Rishikesh
10-08-2020

Scanned with CamScanner